B.A. (Hon's & Subsidiary)
Part-I, Paper-I
GENERAL PSYCHOLOGY

By- Dr. Ramendra Kr. Singh
HOD of Psychology
D.K. College, Dumraon
(Buxar)
V.K.S.U, Ara (Bhojpur)
Bihar
Email - ramendrasinghdkc@gmail.com

बुद्धि के स्वरूप एवं विशेषताएँ
Nature and characteristics of Intelligence

बुद्धि एक सामान्य पद है जिसका प्रयोग प्रायः हम अपने रोजमर्रा की जिन्दगी में करते हैं। इसकी परिभाषा तथा स्वरूप को लेकर मनोवैज्ञानिकों में गहरा मतभेद है। मनोवैज्ञानिक इसे अपने-अपने ढंग से परिभाषित करने का प्रयास किये हैं। फ्रीमैन ने मनोवैज्ञानिकों द्वारा दी गई तमाम परिभाषाओं को चार वर्गों में बाँटकर अध्ययन किया है। यहाँ भी हम फ्रीमैन द्वारा वर्गीकृत की गई परिभाषाओं को ध्यान में रखते हुए बुद्धि की परिभाषा एवं स्वरूप को समझने का प्रयास करेंगे :-

(1.) बुद्धि एक अभियोजन की योग्यता :- इस दृष्टिकोण के समर्थक मनोवैज्ञानिकों का मानना है कि "अभियोजन की योग्यता ही बुद्धि है।" अर्थात बुद्धि वह योग्यता है जिसके बदौलत व्यक्ति अपनी आवश्यकता एवं बाह्य वातावरण के बीच संतुलन संतुलन स्थापित करने में कामयाब हो पाता है। इस श्रेणी में वेल्स, स्टर्न, काल्विन आदि की परिभाषाएँ आती हैं। ये लोग अभियोजन को ही बुद्धि का मापदंड मानते हैं। —

Scanned By Scanner Go

जा सकता है। वस्तुतः अभियोजन की योग्यता एवं बुद्धि को एक मानना उचित नहीं लगता है। इसीलिए इस वर्ग की परिभाषाओं की आलोचनाएँ की जाती हैं क्योंकि बुद्धि बुद्धि मुख्यरूप से जन्मजात होता है जबकि अभियोजन योग्यता अर्जित है। अतः दोनों के बीच के सम्बन्ध को निर्धारित करना कठिन हो जाता है। दूसरी बात यह है कि बुद्धि मे समायोजन की योग्यता के अलावे भी बहुत चीजें आती हैं। अतः इस वर्ग की परिभाषाएँ एक-पक्षीय लगती हैं।

(2) बुद्धि: सीखने की योग्यता :- फ्रीमैन ने इस वर्ग के अन्तर्गत वैसी परिभाषाओं को रखा है जो बुद्धि को सीखने की योग्यता मानते हैं। इस विचारधारा के समर्थक मनोवैज्ञानिकों का मानना है कि जो व्यक्ति जल्द सीखते हैं और जटिल विषयों को सीख लेते हैं वे लोग बुद्धिमान होते हैं और जो लोग देर से सीखते हैं तथा जटिल विषय को नहीं सीख पाते हैं वे मंद बुद्धि या कम बुद्धिवाले होते हैं। इसमे एबिंगहॉस, बकिंघम, गोडार्ड आदि की परिभाषाएँ आती हैं। Ebbinghaus (1897) के अनुसार -

"सीखने तथा पूर्वअनुभूति से लाभ उठाने की योग्यता ही बुद्धि है।"

इस वर्ग की परिभाषाओं की समालोचनात्मक अध्ययन करने पर पाते हैं कि ये दोषपूर्ण हैं। ऐसी परिभाषाएँ भी एक पक्षीय है क्योंकि इनमे अन्य पक्षों की अवहेलना की गई है। इस संदर्भ मे "Orgon & Kenq" का कहना है कि "केवल सिखाने की योग्यता के रूप मे बुद्धि को परिभाषित नहीं किया जा सकता है। सीखना एवं बुद्धि को एक मानना उचित नहीं है।

(3) बुद्धि: चिन्तन की योग्यता :- इस वर्ग की परिभाषाएँ "बुद्धि को चिन्तन की योग्यता मानता है। इनकी मान्यता है कि जिनकी बुद्धि अधिक होती है, ऐसे लोग बुद्धिमान होते हैं। बुद्धिमान व्यक्ति के पास Abstract thinking होती है। इसके अलावे कम बुद्धिवाले के पास Abstract thinking की योग्यता कम होती है। टर्मन ने अमूर्त चिन्तन की योग्यता को बुद्धि माना है, इसी तरह गैरेट के अनुसार "चिन्तन की योग्यता ही बुद्धि है।

इस समूह की विचारधाराएँ भी दोषपूर्ण है

Scanned By Scanner Go

केवल चिंतन की योग्यता को बुद्धि मान लेना उचित नहीं है। चिंतन बुद्धि का एक अंश हो सकता है एकमात्र योग्यता नहीं। अतः यह केवल आंशिक व्याख्या ही कर पाता है।

(4) बुद्धि : एक समग्र योग्यता :- फ्रीमैन ने बुद्धि की परिभाषाओं की एक चौथी श्रेणी में भी विभाजित किया, जो बुद्धि को समग्र योग्यता मानते हैं। इसके तहत वेश्लर, कागन एवं हेवमैन, रेक्सनउर हस्बैंड आदि की परिभाषाओं को रखा गया है। इस वर्ग की परिभाषाएँ सर्वाधिक स्पष्ट एवं संतोषजनक हैं। इनलोगों का मानना है कि बुद्धि बिजली की धारा की तरह है जो दिखाई तो नहीं पड़ती है लेकिन कहीं प्रकाश कहीं हवा तो कहीं आग एवं पावर के रूप में अपने अस्तित्व का अहसास अवश्य कराती है।

इस वर्ग की परिभाषाओं में वेश्लर द्वारा दी गई परिभाषा सर्वाधिक लोकप्रिय एवं संतोषजनक है क्योंकि यह परिभाषा बुद्धि के स्वरूप पर प्रकाश डालने में बहुत हद तक सक्षम है। वेश्लर के ही शब्दों में, - Intelligence is the aggregate or global capacity of an individual to act purposefully, to think rationally and to deal effectively with his environment."

अर्थात् "बुद्धि व्यक्ति की वह समग्र योग्यता है क्षमता है जो उसे उद्देश्यपूर्ण कार्य करने में विवेकपूर्ण चिन्तन करने में तथा प्रभावपूर्ण ढंग से आयोजन करने में मदद करती है।

इस तरह स्पष्ट हो जाता है कि बुद्धि सम्पूर्ण योग्यता है जो व्यक्ति को प्रत्येक कार्य सफलतापूर्वक निष्पादित करने में सहायता प्रदान करती है, इसीलिये इसकी तुलना विद्युतधारा से की जाती है जो अदृश्य होते हुए भी कई रूपों दृश्य होती है और कार्य सम्पन्न होने में मदद करती है, इसके बावजूद भी यह परिभाषा सर्वमान्य नहीं है। इसीलिए Hilgard & Atkinson (1976) ने कहा है " बुद्धि वह है जिसे उचित ढंग से एक मानसिक परीक्षण मापता है।"

विशेषताएँ

बुद्धि के स्वरूप को अच्छी तरह समझने के लिये उसकी विशेषताओं पर प्रकाश डालना आवश्यक हो जाता है, जो निम्नलिखित हैं:-

(1) सतर्कता :- बुद्धि की पहली विशेषता सतर्कता है। बुद्धिमान व्यक्ति अपने चातुर्दिक होने वाली वातावरणीय परिवर्तनों के प्रति सतर्क होकर अपने इर्द-गिर्द घटित होनेवाली धार्मिक, राजनीतिक, सामाजिक एवं आर्थिक तथा प्राकृतिक घटनाओं के प्रति संवेदनशील होता है। वातावरण में परिवर्तन के साथ अपने को परिवर्तित करता है तथा समायोजित होने के लिए प्रयास करता है। इसीलिए इसे पहले Alertness test भी कहा जाता था।

(2) धारण की क्षमता :- इस संदर्भ में किये गये अध्ययनों से पता चलता है कि धारण की क्षमता बुद्धि की एक महत्वपूर्ण विशेषता है। Memory Span test पर किये गये प्रयोग से पता चलता है कि बुद्धिमान व्यक्ति या छात्रों का Recall एवं Retention सामान्य छात्रों की तुलना में अधिक होता है। LAUTIT (लाउटिट) का अध्ययन भी इस बात की पुष्टि करता है।

(3) विचारों का परिचालन :- बुद्धि की यह एक प्रमुख विशेषता है। बुद्धिमान व्यक्ति विभिन्न तरह की समस्याओं से निजात पाने के लिए अपने विचारों में परिवर्तन लाते हैं, जोड़-घटाव करते हैं और समाधान ढूंढ लेते हैं।

(4) आत्मआलोचना (Self criticism & appraisal) यह एक महत्वपूर्ण विशेषता है। बुद्धिमान व्यक्ति अपनी कमियों को ढूंढता है। गलतियों से सीखता है। अपने व्यवहारों में बदलाव लाकर नई परिस्थिति में समायोजित होने का प्रयास करता है।

(5) आत्मविश्वास :- बुद्धि की यह प्रमुख विशेषता है। बुद्धिमान व्यक्ति जटिल से जटिल परिस्थितियों में दृढ़ता से समाधान ढूंढते हैं जमकर सामना करता है। उनका आत्मविश्वास उसे संबल प्रदान करता है।

(6) विचारों के समीकरण की क्षमता :- यह बुद्धि की विशेषता है जिसके माध्यम

Scanned By Scanner Go

पर उसके स्वरूप को समझा जा सकता है। बुद्धिमान व्यक्ति में उसकी क्षमता अधिक होता है जिससे वे समस्याओं Assimilation द्वारा निदान निकाल लेते हैं।

इस तरह देखते हैं कि बुद्धि एक अभिधारणा है जिसे हम देख तो नहीं पाते हैं पर मानव की बुद्धिपरक व्यवहारों द्वारा समझ अवश्य ही सकते हैं। इसी संदर्भ में विद्वानों ने इसकी तुलना कुछ धारा से की है जिसे हम देख तो नहीं पाते हैं पर विविध रूप में अपने अस्तित्व का अहसास जरूर कराती है। ठीक उसी प्रकार बुद्धि कहीं शिक्षण, कहीं अभियोजन, कहीं चिन्तन तो कहीं स्मरण के रूप में व्यक्ति की मदद करती है। अतः ऐसी हालत में Hilgard and Atkinson की विचार सही प्रतीत होती है कि बुद्धि परीक्षण जो कुछ मापता है, वही बुद्धि है।